यशवंतराव चव्हाण आणि पंचायतराज व्यवस्था

संपादक
डॉ. राजेश करपे । डॉ. गणेश मोहिते

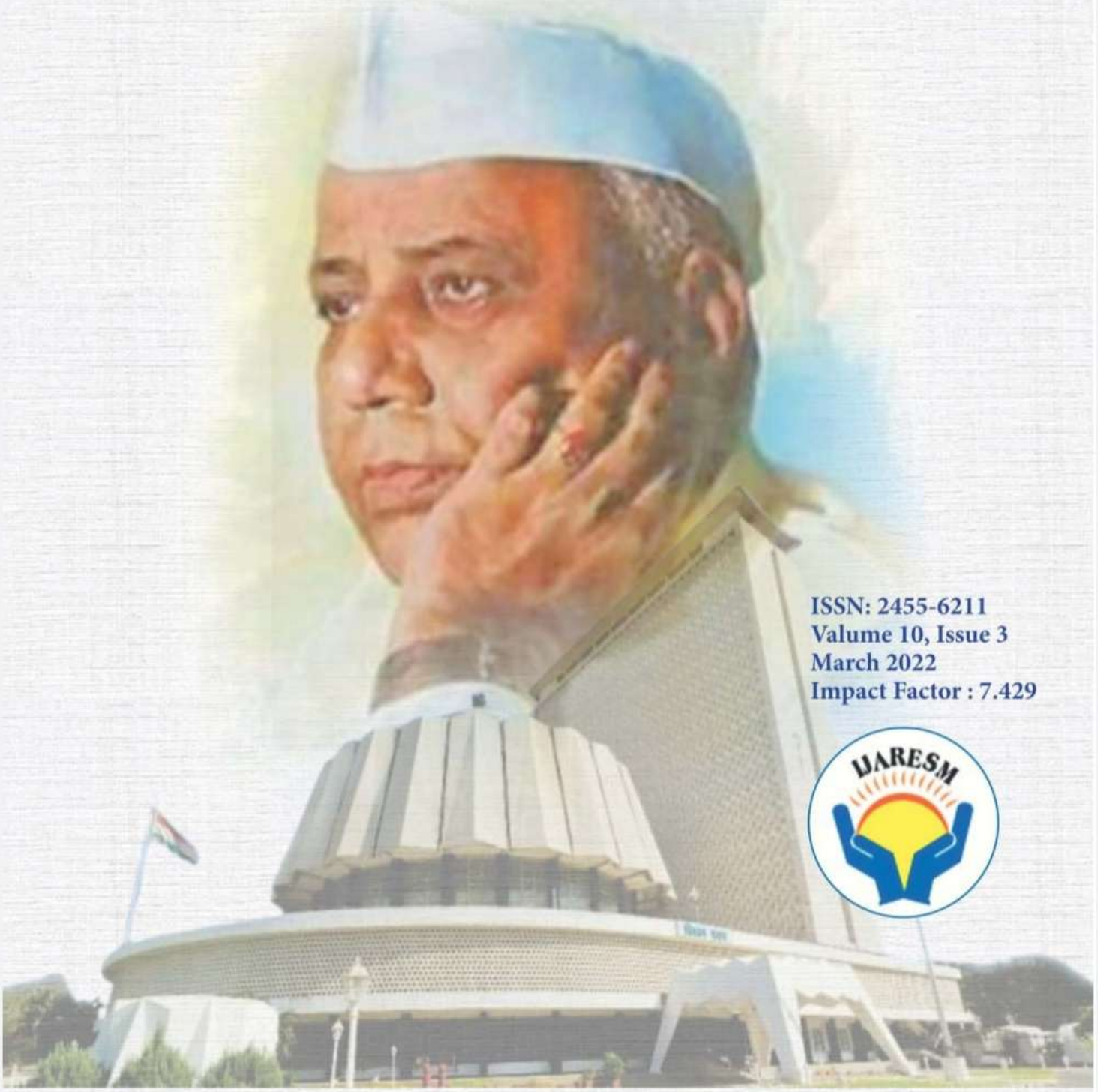

ISSN: 2455-6211
Volume 10, Issue 3
March 2022
Impact Factor : 7.429

IJARESM

International Journal of All Research Education & Scientific Methods

An ISO Certified Peer-Reviewed Journal
ISSN: 2455-6211

IMPACT FACTOR: 7.429

One Day National Conference on Yashwantrao Chavan and Panchayat Raj System," held on 26th March, 2022 was organized by LokSanwad Foundation Aurangabad, Maharashtra.

International Editorial Board

Chief Editor

Dr. E. Stanley Lee, Ph.D
Professor and Director of Graduate Studies
Kansas State University, United States
E-mail: editor.ijaresm@gmail.com

Associate Editors

Dr. Adnan Adnan, Ph.D
Deptt. of Manufacturing System Engineering
Kingston University
London, United Kingdom

Dr. Vikram Kumar Kamboj
Associate Professor, Department of
Electrical Engineering
Lovely Professional University,
Jalandhar,
Punjab, India

Prof. Bilal A. Akash, Ph.D
Dean, College of Engineering
Dhofar University, Salalah, Oman

Dr. Sushil Kumar Singh, Ph.D
Department of Education & Humanities
Lovely Professional University,
Punjab, India

Dr. A K Atayero, Ph.D
Dept. of Electrical & Info. Engineering
Covenant University, Nigeria

Dr. Qassim Qwaider, Ph.D
Head, Management
Information System Majmaah
University, Saudi Arabia

Dr. S R Elagroudy, Ph.D
Assistant Professor,
Environmental Engineering
Ain Shams University, Cairo, Egypt

Dr. Sanman Jain Nellikar, Ph.D
College of Economics,
Management & Information System
University of Nizwa, Oman

Dr. Mosabber Uddin Ahmed, Ph.D
Assistant Professor, Dept. of Applied Physics,
Electronics & Comm. Engineering
University of Dhaka, Dhaka, Bangladesh

Dr. Yash Pal Singh, Ph.D
Director & Associate Professor
Somany (PG) Institute of
Technology and Management, Rewari, India

विशेषांक अतिथी संपादक मंडळ

डॉ. राजेश करपे **डॉ. गणेश मोहिते**

सदस्य

प्रा. डॉ. वसंत झेंडे, प्रा. योगेश कवडे, डॉ. अजय देशमुख,
प्रा. डॉ. टीपू सुलतान, काकेश गरुड,

International Journal of All Research Education and Scientific Methods (IJARESM), ISSN: 2455-6211
Volume 10, Issue 3, March- 2022, Impact Factor : 7.429, Available online at : www.ijaresm.com

... अनुक्रम...

१)	डॉ. आर. के. काळे	१२
२)	डॉ. सायवण्णा धोडके	१७
३)	प्रा. डॉ. अरुण बाबा	२०
४)	डॉ. मधुकर गुलाबराव शिंदे	२३
५)	प्रा. डॉ. बाय. ई. भालेराव	२७
६)	प्रा. डॉ. सुनिता अविनाश शिंदे	३१
७)	किरण रामकृष्ण राऊत, डॉ. रमाकांत तिडके	३५
८)	डॉ. प्रा. शेख एजाज एम, शेख इस्माईल महेबुब	३७
९)	अशोक रामचंद्र गोरे	४०
१०)	प्रा. संतोष मारकवाड	४३
		४८
१२)	राजरत्न शं. गवई	५१
१३)	डॉ. विनोदकुमार विलासराव वायचळ 'बेदार्थ'	
		५७
		६२
16)	Dr. Ajay Sahebrao Deshmukh, Dr. Ravikiran Jaydeo Swant	66
१७)	डॉ. उमाकांत राठोड, संभाजी अंकूश तांबे	७०
१८)	डॉ. गंगणे अमोल उत्तमराव	७४
१९)	प्रा. दीक्षित साहेबराव ज्ञानोबा	७८
२०)	प्रा. जोगदंड मकरंद बळीराम	८२
२१)	डॉ. महेश विनायक रोटे	८६
२२)	डॉ. मनिषा सुरासे	८९
२३)	डॉ. नीता र. तोरणे	९२
२४)	प्राचार्य डॉ. दीपक गोविंद देशपांडे	९६
२५)	प्रा. डॉ. गजानन पांडुरंग जाधव	९९
२६)	प्रा. मुलाणी एस. पी.	१०३
२७)	प्रा. परसराम एकनाथ शेळके	१०७
28)	Mr. Sachin N. Sanap	110
२९)	डॉ. दीपक भुसारे	११३
३०)	डॉ. जनार्दन श्रीकांत जाधव	११६
31)	Dr. Yogesh A. Patil	122
३२)	प्रा. माधवी सुरेंद्र पवार	१२४
३३)	डॉ. मधुकर विठोबा जाधव	१३०
३४)	स्वाती चेके	१३३
३५)	छाया श्रीमंत साळवे	१३७
३६)	डॉ. रमाकांत शिवाजीराव शातलवार	१४१
३७)	श्री. विश्वास शहाजीराव यादव	१४५
३८)	प्रा. राठोड ईश्वर लक्ष्मण, प्राचार्य डॉ. एस. पी. गायकवाड	१४८
३९)	डॉ. खाडप संजय बाबुराव	१५३
४०)	सखाराम शहादेव शिंदे	१५६
४१)	प्रा. डॉ. गितांजली सदाशिवराव मोटे, श्री. विष्णू कडूबा देवरे	१५९
४२)	भोरे किरण मोही	१६३
४३)	डॉ. साहेब राठोड, गणेश मारोती कचरे	१६७
४४)	डॉ. नामानंद गौतम साठे	१७०
४५)	प्रा. डॉ. रमाकांत तिडके, श्रीमती संजीवनी दिगंबर डावकर	१७१
४६)	डॉ. जयश्री आसाराम तळेकर	१७७
४७)	उजमा ऐनोद्दीन सिद्दीकी	१८०
४८)	प्रा. डॉ. सदाशिव हरिभाऊ सरकटे, उर्मिला नारायण क्षीरसागर	१८२
४९)	डॉ. किरण नामदेव गायकवाड	१८६
५०)	प्रा. डॉ. सोनकांबळे चेतना प्रल्हाद, डॉ. सांजुरे दिपक प्रल्हाद	१९०
५१)	डॉ. ऊर्जित जनार्दन करवंदे	१९५
५२)	प्रा. डॉ. सदाशिव हरिभाऊ सरकटे, अनिता मदनराव शिंदे	१९८
53)	Dr. Nirmal E. S.	202
५४)	लोंढे अभिजीत शंकरराव	२०६
५५)	प्रा. डॉ. कृष्णा भवारी	२११
५६)	लेफ्ट. डॉ. पावडे खोब्राजी वामनराव	२१५
57)	Vinyak Nikas	218
५७)	घायतडके सचिन सहादू	२२१
58)	Rakhonde M. K.	226
५९)	प्रा. डॉ. कालिदास दिनकर फड	२३१
६०)	डॉ. प्रतिभा चिकमठ	२३३
६१)	शिंदे सखाराम बाबूराव	२३८
६२)	प्रा. डॉ. सदाशिव हरिभाऊ सरकटे, मिनाक्षी मोतीराम इंगळे	२४३
६३)	कु. सोनाली लक्ष्मणराव इंगळे	२४६
६४)	पवार रागिणी व्यंकटराव	२४९
६५)	प्रा. दत्तात्रय दादासो जाधव	२५३
६६)	अभिनिता लक्ष्मण बनकर	२५८
६७)	प्रिती किशोर ढेपे	२६२

International Journal of All Research Education and Scientific Methods (IJARESM), ISSN: 2455-6211
Volume 10, Issue 3, March- 2022, Impact Factor : 7.429, Available online at : www.ijaresm.com

मराठी के सह्याद्री और हिंदी के हिमालय : महानायक यशवंतराव चव्हाण

डॉ. विनोदकुमार विलासराव वायचळ 'वेदार्य'

अध्यक्ष, हिंदी विभाग व्यंकटेश महाजन वरिष्ठ महाविद्यालय, उस्मानाबाद
शोध निर्देशक एवं निमंत्रित सदस्य हिंदी अध्ययन मंडल, बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद

शोधसार

यशवंतराव चव्हाण राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक और कृषिक समस्याओं को तो बडे ही कुशलता से सुलझाते रहें। पर शैक्षणिक क्षेत्र में हिन्दी के प्रति उनका अ गाध प्रेम दिखाई देता हैं। राष्ट्रभाषा हिंदी के विषय पर उनके तीन व्याख्यान अत्यंत प्रसिद्ध हैं| जिनके द्वारा वे राष्ट्रभाषा हिन्दी का महाराष्ट्र में उचित निर्वाह करते हुए दिखाई देते हैं। इस तरह से हम देखते हैं कि यशवंतराव का राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति महत्वपूर्ण योगदान दिखाई देता है। वे हिंदी के साथ साथ भारतीय प्रादेशिक भाषाओं के भी पक्षधर हैं| त्रिभाषा-सूत्र के हिमायती हैं|

हिन्दी राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के कार्य की बहुलता क्रमशः बढ़ती ही जा रही है। अतः हिन्दी भाषा का अध्यापन और परीक्षा प्रणाली में बहुआयामी प्रगति हो रही है। यह बड़े आनन्द की बात है। यह ठिक है कि अहिन्दी भाषी प्रदेशों में हिन्दी भाषा के प्रचार के लिए कतिपय विशेष पुरस्कार रखे जाते हैं। किन्तु हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए इस प्रकार के पुरस्कारों की आवश्यकता नहीं है| वास्तव तो यह है कि भले ही कुछ प्रदेशों में प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप में हिन्दी का विरोध हो रहा है, फिर भी हिन्दी की साक्षरता का प्रसार अत्यन्त वेग से हो रहा है। बहुसंख्य लोग हिन्दी का कामचलाऊ ज्ञान प्राप्त करेंगे तो एक ऐसे चरण पर पहुँचेंगे जहाँ यह समस्या समाप्त हो जाएगी। ऐसे समय भी सरकारी और गैर सरकारी क्षेत्र से राष्ट्रभाषा प्रचार का कार्य करने वाले कार्यकर्ताओं ने अपने कार्य को उसी समर्पित भावना से जारी रखना चाहिए | यही समर्पित भावना हिंदी को एक महत्वपूर्ण पाडाव तक लाकर पहूँचाएगी|

कूँजी शब्द :

भाषा, राष्ट्रभाषा, हिंदी, अहिन्दी भाषी प्रदेश, हिन्दी राष्ट्रभाषा प्रचार समिति ,मुंबई राष्ट्रभाषा प्रचार सभा, अखिल भारतीय राष्ट्रीय एकात्मता परिषद, अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति आदि|

विषय वस्तु :

"एक कडी तो जंजीर नहीं,

एक नुक्ता तो तसवीर नहीं,
तक़दीर कौमों की होती हैं,
एक शख्स की तकदीर,
तो मुल्क की तकदीर नही।"[१]

अमीर खुसरों के इस शेर से यशवंतराव चव्हाण की अपने राष्ट्र के प्रति देखने की दृष्टि समझ में आती है। पुणे के तळेगाव में एक भाषण में यशवंत जी ने यह शेर देश के संदर्भ में कहा था। यशवंत चव्हाण जी महाराष्ट्र के ही कुशल और कर्तबगार राजनेता ही नहीं थे, अपितु संपूर्ण देश के हितचिंतक , समाज सुधारक, देशभक्त तथा एकात्मता के प्रति कर्तव्य निभानेवाले एक सच्चे नागरिक और आदर्श राजनेता के रुप में दृष्टिगत होते हैं। वे एक मराठी भाषी होते हु ए भी राष्ट्रभाषा हिन्दी पर भी उतना ही स्नेह और प्रेम रखते हैं। वह समझ चुके थे कि अगर राष्ट्र को एकता की डोरी में बाँधे रखना हैं तो यह कार्य राष्ट्र भाषा हिन्दी ही कर सकती हैं।[२]

मुंबई राष्ट्र भाषा प्रचार सभा के पदवीदान समारंभ के समय यशवंतराव ने भाषण दिया था। तब उन्होने एक संपर्क भाषा के रुप में हिन्दी भाषा को महत्व दिया। क्योंकि भारत जैसे बहुभाषी राष्ट्र में एक में सामान्य भाषा संपर्क के लिए आवश्यक थी। वह सामान्य भाषा सभी के प्रयोग तथा उपयोग में होनी चाहिए और वह भाषा केवल हिन्दी ही हो सकती हैं। [३]

हिन्दी भाषा उस समय १९६०-६१ में संक्रमण कल से गुजर रही थी। दक्षिण के राज्यों का हिन्दी को किया हुआ विरोध , उसके विराध में किये हु ए आन्दोलन जिससे हिन्दी की अवस्था कमजोर हो चुकी थी। पर यशवंतराव ने कहा कि दूसरी भाषाओं की तुलना में हिन्दी ही एक ऐसी भाषा हैं जो देश के हर एक भाग में लोग बोलते और उसे संपर्क में लाते हैं। इसलिए हिन्दी को ही राष्ट्रभाषा का स्थान मिलना चाहिए। साथ ही राज कीय कारभार के लिए भी हिन्दी से उचित भाषा अन्य कोई नहीं हो सकती। हिन्दी को राष्ट्रभाषा होने का स्थान प्राप्त होने के कारण उसे टिकाए रखने का दायित्व हिन्दी साहित्यकारों का हैं।

हिन्दी को भारत के कोने-कोने तक पहुँचाने के लिए उसका प्रचार और प्रसार जोरों पर होना चाहिए। राज्य का कारभार चला सके इतनी शक्ति और पात्रता हिन्दी भाषा में ही हो सकती हैं। वे कहते हैं हिन्दी में जो भी बड़े ही अच्छे-अच्छे साहित्य हैं उन्हें अन्य भाषाओं में, और अन्य भाषाओं के अच्छे साहित्य हिन्दी में अनुदित करके साहित्यों का आदान -प्रदान करके ही हम एक दूसरों की संस्कृति और सभ्यता को समझ सकते हैं। दो भाषाओं में जबतक आपस में सामंजस्य निर्मित नहीं होता तबतक वह एक दुसरे से अच्छी तरह परिचित नही सकते। जागतिक भाषा का साहित्य भी हिन्दी में होने के कारण व समृध्द् होगी। वैचारिक साहित्य भी हिन्दी में होना चाहिए ऐसा यशवंतराव को लगता था। पाश्चिमात्य विचारों के दर्शन, विज्ञान की प्रगती व जीवन मूल्य हिन्दी साहित्य में से व्यक्त होना चाहिए। तथा साहित्यकारों को उनके योग्यता के अनुसार प्रोत्साहन मिलना चाहिए व उनकी कलाकृति प्रसि द्ध होने के लिए उन्हें हर तरह सहायता उपलब्ध करानी चाहिए। संस्कृत के तत्सम जैसे क्लिष्ट शब्दों के बदले खड़ी बोली हिन्दी के तद्भव सरल शब्दों का प्रयोग करना चाहिए | तभी तो भारतीय जनता उसे सहजता से समझकर ग्रहण कर सकेंगे और राष्ट्रीय एकता के भाव उनमें जागृत हो सकेंगे। जिससे हिन्दी भाषा की प्रगति के साथ-साथ देश की एकता में भी बढोत्तरी होंगी।

भारतवर्ष अभी प्रादेशिक भाषाएँ भी देवनागरी लिपि में लिखी जाएँ| [४]

यशवन्तराव चव्हाण के प्रमुख व्याख्यान - राष्ट्रभाषा की समस्या [५](राष्ट्रभाषेचा प्रश्न) पर ही विशेष चर्चा करेंगे , जो दि. २८ मई १९६६ के दिन औरंगाबाद में आयोजित अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के वार्षिक अधिवेशन के सभापति पद के उपलक्ष्य में दिया था। इस व्याख्यान के प्रारम्भ में ही यशवन्तराव चव्हाण ने कहा था कि , वे इस अधिवेशन के

सभापति पद पर आसीन होना अपना सौभाग्य मानते हैं क्योंकि , इस पद की श्रीवृद्धि महात्मा गान्धी जी , राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन , डॉ. राजेन्द्र प्रसाद , पण्डित जवाहर लाल नेहरू , लाल बहादूर शास्त्री जैसे विभूतियों ने की थी। यशवन्तराव चव्हाण महापुरुषों की इस मालिका में अपना नाम देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुए थे। वे स्वयं को इस पद के लिए अयोग्य मानते थे क्योंकि , विद्वत्ता और राजनैतिक महत्ता में ये अन्यों के समकक्ष नहीं हो सकते थे। फिर आपने केवल विनम्रता एवं देशभक्ति की भावना और हिन्दी ही हमारी राष्ट्रभाषा है इस विश्वास और प्रेम की खातिर इस पद का सम्मान किया था।

आज के सन्दर्भ में राष्ट्रभाषा की समस्यापर विचार करें और हमारे देश के एक हजार वर्षों के इतिहास का विचार करें तो राष्ट्रीय प्रगति के नज़रिये से राजभाषा के रूप में अखिल भारत की भाषा हिन्दी का विकास होना ही अत्यावश्यक है। इस बारे में दो राय नहीं हो सकती। अर्थात् इस महान लक्ष्य की प्राप्ति में अनेक बाधाएँ अवश्य आएँगी , चाहे जिनती बड़ी बाधाएँ आएँ, हमें तो उन बाधाओं का निर्मूलन करना ही होगा। सर्वप्रथम हमें हमारे देश की आज की परिस्थिति का विचार करना होगा। भारतवर्ष एक प्रजासत्ताक राष्ट्र है। चौदह (तत्कालीन) राज्यों से इस संघराज्य का निर्धारण हुआ है। इन राज्यों में से अधिकांश राज्यों की स्वयं की पृथक भाषा है, पृथक् परम्पराएँ हैं, रीति-रिवाज़ हैं। स्थूल रूप में सभी राज्यों की पृथक्-पृथक् जीवनपद्धति अथवा संस्कृति है। राज्य बड़ा हो या छोटा , उस-उस राज्य में रहनेवाले लोगों की जो भाषा है , उसी का उनके शासन , शिक्षा और दैनंदिन व्यवहार की भाषा होनी चाहिए। अन्यथा हमारा प्रजातन्त्र नाम का ही प्रजातन्त्र रह जाएगा। प्रजातन्त्र की आत्मा ही गायब हो जाएगी, क्योंकि जनता की इच्छा ही प्रजातन्त्र का मूलाधार होती है।

आज भारतवर्ष की लगभग सभी बातें जो शासकीय एवं वैधानिक अथवा स्थूल रूप से राजनैतिक क्षेत्र में समाविष्ट होती हैं। आपका यह संगठन इस क्षेत्र से बाहर का संगठन है। सम्पूर्ण भारतवर्ष में और विशेषकर अहिन्दी भाषी प्रदेशों में किसी भी प्रकार का आडम्बर न करते हुए आप हिन्दी भाषा के प्रचार और प्रसार का कार्य कर रहे हैं। एक बात महत्वपूर्ण है कि इस कार्य का स्वरूप क्रियात्मक एवं विधायक होने के कारण आपके कार्यकर्ताओं और प्रचारकों के मन में किसी प्रकार का संशय या शंका नहीं है। भारतवर्ष के जिस प्रदेश में कोई भी हिन्दी बोलता तक नहीं था , उस प्रदेश में इस संस्था के कार्यकर्ता अत्यन्त सेवाभाव से काम कर रहे हैं। इन्हीं लोगों के माध्यम से हिन्दी का प्रचार दूर-दूर तक हुआ है। किन्हीं विशेष प्रदेशों में राजनैतिक कारणों से होनेवाले विरोध के कारण ये कार्यकर्त्ता विचलित नहीं होते हैं , क्योंकि हिन्दी का प्रचार करते समय ये प्रचारक लोग अन्य भारतीय भाषाओं का सम्मान भी करते हैं। जनता ने हिन्दी का अध्ययन करते समय अन्य भारतीय भाषाओं की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए , यही इन प्रचारकों का दृष्टिकोण है। इस संस्था के कार्यकर्ताओं ने इसी प्रवृत्ति से कार्य किया तो, हिन्दी का प्रचार-प्रसार बढ़ता जाएगा और कुछ ही समय में हिन्दी सम्पूर्ण भारतवर्ष में पहुँच जाएगी , इस बारे में कोई संशय नहीं है। आज भी इस देश के प्रत्येक प्रदेश के लोग सरल हिन्दी की आसानी से समझते हैं। इस बात को श्रेय इस समिति ने और कार्यकर्ताओं ने समर्पित होकर किया हुए कार्य को ही जाता है। हिन्दी भाषा को एक अनिवार्य अथवा ऐच्छिक विषय के रूप में सम्पूर्ण भारतवर्ष में पढ़ाया जाता है। सरकारी नौकरों हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए सरकार की ओर से जो प्रयास हो रहे हैं वे भी सफल हो रहे हैं। इन सभी घटनाओं का योग्य परिणाम होकर भारतवर्ष के भाषिक माहौल को सुधराने में अवश्य ही सहाय्यता होगी। अतः आपको एवं हिन्दी भाषा के अन्य प्रशंसाकों तथा प्रचारकों से नम्र प्रार्थना है कि, आपने बिना धीरज खोये इस कार्य को धीरे-धीरे बढ़ाना चाहिए। क्योंकि सहनशीलता एवं क्षमावृत्ति ही विरोध का सही-सही उत्तर है। मात्र कतिपय देशों पर ही नहीं अपितु महाद्विपों पर जिन विचारों और भाषाओं का प्रभाव दिखाई देता है। यह बात ध्यान देने योग्य है कि , उन विचारों और भाषाओं का प्रचार-प्रसार इसी है। हिन्दी भाषा के प्रचार में जो कठिनाइयाँ हैं वो प्रत्यक्ष प्रचार कार्य का अनुभव न होने मार्ग से हुआके कारण ही हैं। उनमें से केवल एक ही कठिनाई पर विचार करते हुए यशवन्तराव चव्हाण ने कहा है कि, यह कठिनाई लिपि से सम्बधित कठिनाई है। भारतवर्ष की समस्त भाषाएँ किसी एक ही लिपि में आबद्ध की जाएँ तो सभी लोक हिन्दी भाषा को आसानी से सीख लेंगे। इतना ही नहीं हिन्दी भाषाभाषी भी अन्य भाषाओं को आसानी से सीखेंगे। कुछ सालों पहले अखिल भारतीय राष्ट्रीय एकात्मता परिषद ने इस बारे में एक सिफारिश की थी कि, भारतवर्ष की सभी प्रादेशिक भाषाएँ भी देवनागरी लिपि में लिखी जाएँ। यदि लिपि के

सम्बन्ध में यह क्रान्तिकारी परिवर्तन हो जाए तो भाषाई समस्या का नामोनिशान तक नहीं रहेगा। भारतीय जनता को अलग-अलग रखनेवाली दीवारें जमींदोज हो जाएँगी , इतना ही नहीं अपितु सभी भाषाओं में आदान-प्रदान होकर वे समृद्ध हो जाएँगी और ये सारी भाषाएँ आज से भी अधिक निकट आ जाएँगी।

एक अन्य सूचना देते हुए यशवन्तराव चव्हाण कहते हैं कि , हिन्दी भाषा का ज्ञान एवं साक्षरता का प्रचार-प्रसार करते समय हिन्दी भाषा को लोग जिस लिपि में लिखना चाहें , उन्हें उस लिपि की छूट देनी चाहिए। भारतवर्ष में सभी भाषाओं की जननी संस्कृत भाषा को देवनागरी लिपि के साथ-साथ अन्य लिपियों के माध्यम से भी सीखा जाता रहा है। यदि संस्कृत को किसी एक ही लिपि में लिखे जाने का दुराग्रह किया होता तो संस्कृत भाषा जीवित भी न रहती। यदि लिपि के बारे में इस प्रकार की सहुलियत देने से लोग जल्दी हिन्दी सीखेंगे तो उन्हें इस बात में स्वतन्त्रता देनी चाहिए। विद्वान , शिक्षाविद एवं समिति जैसी संस्थाएँ इस सलाह पर अवश्य विचार करेंगे।

अंत में हिंदी के इस योद्धा के बारे में इतना ही कहना चाहूँगा -

ये मेनन नहीं चव्हाण है, ये स्वीकार नहीं, ये एक आन है| 'हटो'
और 'हटो' इसका नारा नहीं, 'बढ़ो' और 'बढ़ो' इसकी शान है|| लडेगा जो इससे
पिस जायेगा, अड़ेगा जो इससे, वह पिट जायेगा| कोई कह दो जाके आयूब
से, अड़ेगा जो इससे मिट जायेगा|| [6]

संदर्भ

1) यशवंतराव चव्हाण: राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रति किया योगदान - डॉ. रज़िया शहेनाज़ शेख, युगपुरुष : यशवंतराव चव्हाण, पृ. १५७ ।
2) तळेगाव, पुणे में संपन्न यशवंतरावचव्हाण का व्याख्यान।
3) मुंबई राष्ट्रभाषा प्रचार सभा के पदवीदान समारोह में आयोजित यशवंतराव चव्हाण का व्याख्यान।
4) अखिल भारतीय राष्ट्रीय एकात्मता परिषद की सिफारिश।
5) राष्ट्रभाषेचा प्रश्न - अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के वार्षिक अधिवेशन में सभापति पद से दिया गया यशवंतराव चव्हाण का व्याख्यान ।
6) ये मेनन नहीं चव्हाण है (हिंदी कविता) -कवि नया जीवन।

लोकसंवाद फाउंडेशन, औरंगाबाद
एक दिवसीय राष्ट्रीय परिषद
यशवंतराव चव्हाण आणि पंचायतराज व्यवस्था

लोकसंवाद फाउंडेशन, औरंगाबाद
एक दिवसीय राष्ट्रीय परिषद
यशवंतराव चव्हाण आणि पंचायतराज व्यवस्था